मातृभूमि और वीर अमर जवानों

के प्रति समर्पित

तथा

उस निर्विकार ईश्वर के प्रति

जिसके हाथ की हम सब कठपुतलियाँ है।

डा. व्यंकटेश वामन कोटबागे
एम.ए.पीएच.डी.
भूतपूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
किसन वीर महाविद्यालय, वाई,
जि. सातारा (महाराष्ट्र)

प्रमाणपत्र

मैं डा. व्यंकटेश वामन कोटबागे, यह प्रमाणित करता हूँ कि, कु. उषा गुलाबराव शिंदे ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर की एम.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध **मोहन राकेश की नाट्य-भाषा** मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक किया है। इसमें प्रस्तुत तथ्य मेरी जानकारी के अनुसार सही है। मैं कु. उषा गुलाबराव शिंदे के प्रस्तुत शोधकार्य के बारे में पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

V.V. Kotbage

स्थल - वाई

दिनांक : 25/9/2002

डा. व्यंकटेश वामन कोटबागे

निर्देशक

अनुशंसा

हम अनुशंसा करते हैं कि , कु. उषा गुलाबराव शिंदे का एम.फिल. (हिंदी) का लघु-शोध-प्रबंध **मोहन राकेश की नाट्य-भाषा** परीक्षणार्थ प्रस्तुत किया जाए।

(J.R. Jadhav)

हिंदी विभागाध्यक्ष
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय
सतारा (महाराष्ट्र)

प्राचार्य
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय
सतारा (महाराष्ट्र)

प्रख्यापन

मै प्रतिज्ञा करती हूँ कि मेरे संशोधन का विषय **मोहन राकेश की नाट्य-भाषा** सर्वथा मौलिक है। इसके प्रस्तुतीकरण के पहले इस या अन्य महाविद्यालय में किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

स्थल - वाई,

दिनांक - 28/6/2002

कु. उषा गुलाबराव शिंदे

शोध-छात्रा

अपनी बात

बचपन से ही हिंदी भाषा के प्रति लगाव होने के कारण हिंदी विषय को मैंने चुना। एम.ए. के फस्ट इयर में मोहन राकेशजी का 'आधे-अधूरे' पढ़ने को मिला। मन में कहीं उनके प्रति पहले से ही रूचि अवश्य थी। राकेशजी का नाम कई बार पढ़ा था और 'आधे-अधूरे' पढ़ने के बाद तो दिलचस्पी और बढ़ गई। मेरे निर्देशक श्री. कोटबागेजी ने इस विषय चुनने का सुझाव दिया तो झट से हाँ कर दी लेकिन उसी क्षण राकेश की नाट्यभाषा पर अध्ययन करना इतनी सरल बात तो नहीं होगी इसका अहसास जरूर हुआ। 'आधे-अधूरे' तो पहले ही पढ़ा था, सोचा वो इतना यथार्थ, नाटक लिख सकते हैं, उनकी भाषा वर्तमान के लिए इतनी प्रदेय है तो मैं क्यों नहीं उन पर अध्ययन कर सकती और इसी जिज्ञासावश उनकी सारी प्रतिभा, उनका साहित्य, उनकी रंगमंचीय भाषा का अध्ययन करने का सौभाग्य मुझे मिला। इस पुस्तक में भी यही देखने मिलेगा।

कितने ही पहलू उनके नाटकों में है। मगर आज के समय में भाषा के महत्व को जानकर इसी विषय का चुनाव किया। क्योंकि यह मेरा प्रयास किसी को भी लाभ दे सकता है, यह अहसास जरूर हुआ। आज सिनेमा (फिल्म) की होड़ में नाटक की दृश्यता पीछे पड़ गयी है लेकिन शब्दों की सही खोज नाटक का स्थान अबाधित रख सकती है और यही प्रेरणा राकेशजी के ही नाटक दे सकते हैं।

इस मुकाम तक पहुँचना मेरे अंदर की चाह अवश्य थी लेकिन कितनी ही प्रेरणाओं ने मुझे प्रेरित किया। मेरी माँ जिसका स्थान सबसे ऊपर हैं। उसीकी बदौलत आज मैं इस मंझिल तक पहुँच पायी हूँ। मेरे पिता, मेरी बड़ी बहन पूजा, मेरे भाई और न जाने कितने ही स्नेही जिनकी छोटी-छोटी प्रेरणाएँ मुझे सदा प्रेरित करती रहीं। मेरे दोस्तों में रूक्मिणी, दिपाली, रूपाली, शबाना, मनिषा, शरद, लतिका, शुभांगी, भगवान, कैलास, इब्राहिम, विजय और प्रमोद आदि सब मेरे प्रेरणास्थल हैं और कितने ही दोस्तों का धन्यवाद करना चाहूँगी जिन्होंने मुझे स्नेह दिया।

इस प्रबंध के निर्देशक और मेरे मार्गदर्शक, मेरे प्रेरणास्थल डा.व्यंकटेश वामन कोटबागेजी के प्रति मैं हमेशा ऋणी रहूँगी।

बचपन से लेकर आज तक जिन-जिन गुरूजनों के प्रेरणास्वरूप आज मै यह कार्य संपन्न कर पा रही हूँ उन सबके प्रति सश्रध्द प्रणाम। प्रमुख रूप से श्री.प्राध्यापक आगेडकरजी की मैं विशेष रूप से ऋणी रही हूँ, जिनकी सहायता से मैं यह प्रबंध पूरा कर सकी हूँ। श्री.प्रा.जयवंत जाधवजी की भी सदैव ऋणी रही हूँ।

लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा, शिवाजी महाविद्यालय, सतारा, किसन वीर महाविद्यालय, वाई के पुस्तकालय से मुझे प्रबंध के लिए साधनसामग्री प्राप्त हुई है। इन संस्थाओं के प्रमुखों के प्रति श्रध्दा और प्रणाम।

इस प्रबंध को अत्यंत कम समय में आकर्षक और सुचारू रूप देनेवाले 'मे.रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा के श्री. मुकुंद ढवलेजी और उनके सहकारी श्री.कुलकर्णी की मै आभारी रहूँगी।

मैंने जिन महान मनिषियों के ग्रंथों का लाभ उठाया है उनके प्रति भी कृतज्ञ हूँ।

दिनांक - 28/2/2002

(उषा गुलाबराव शिंदे)

स्थल - सतारा